

केन्द्रीय बैंक संप्रेषण में दुविधा की स्थिति: हाल के अनुभवों पर आधारित कुछ विचार*

दुव्वुरी सुब्बाराव

सबसे पहले बिजनेस स्टैंडर्ड और मेरे अच्छे मित्र टी.एन. निनान तथा संजय बारु को इस बिजनेस स्टैंडर्ड का दूसरा वार्षिक व्याख्यान देने के लिए मुझे आमंत्रित करने के लिए धन्यवाद। यह ऐसा सम्मान है जिसे मैं बहुत अधिक महत्त्व देता हूँ।

केन्द्रीय बैंक संप्रेषण

2. अपने कार्य के एक अंग के रूप में मुझे बहुत सारे व्याख्यान संबंधी दायित्व स्वीकार करने पड़ते हैं और मुझे अक्सर अपने भाषण के लिए विषय और उसके लिए मुख्य संदेश निर्धारित करने से जूझना पड़ता है। उस परिप्रेक्ष्य में, इस व्याख्यान के लिए विषय तय करना अपेक्षाकृत आसान रहा है। मैंने 'केन्द्रीय बैंक संप्रेषण में दुविधा की स्थिति' पर बोलने का विकल्प चुना है और यह विकल्प तीन कारणों से प्रेरित रहा है।

3. एक, रिज़र्व बैंक के गवर्नर के रूप में दो वर्षों से कार्य करते हुए मैं अभी भी सीखने के दौर से गुजर रहा हूँ। मैंने बहुत सी चीजें सीखी हैं। उनमें से एक है कि नीति का संप्रेषण उतना ही महत्त्वपूर्ण है जितना नीति की विषयवस्तु और यह अक्सर बहुत अधिक चुनौतीपूर्ण होती है।

4. इस व्याख्यान के विषय के मेरे विकल्प के लिए दूसरी प्रेरणा हाल के संकट का वह अनुभव है जब सारे विश्व में केन्द्रीय बैंकों ने महसूस किया कि संकट प्रबंधन नीति की प्रभावकारिता के लिए संप्रेषण किस प्रकार महत्त्वपूर्ण है। खुलेपन के प्रति यह झुकाव वास्तव में केन्द्रीय बैंकों के रुझान में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन को दर्शाता है। जैसा कि लियाकत अहमद ने अपनी भारी बिक्री वाली पुस्तक 'लॉर्ड्स ऑफ फाइनेंस' में कहा है कि केन्द्रीय बैंक पहले विश्वास करते थे कि संकट के समय में, विभिन्न संस्कृतियों में, अपने बच्चे को दी गयी मां की इस सलाह का पालन करना बुद्धिमत्तापूर्ण होता है कि "यदि आप कोई अच्छी बात नहीं कह सकते हैं तो कुछ भी मत कहो"। ऐसा इस दुविधा के पुनरागमन के बाद हुआ जिसका केन्द्रीय बैंक अफरातफरी के समय सामना करते हैं। यदि आप कोई ईमानदारीपूर्ण सार्वजनिक

*7 जनवरी 2011 को नई दिल्ली में भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर डॉ. दुव्वुरी सुब्बाराव के द्वारा दिया गया दूसरा बिजनेस स्टैंडर्ड व्याख्यान।

वक्तव्य देते हैं तो आपको उन्माद का पोषण करना पड़ेगा। दूसरी तरफ, यदि आप पुनः आश्वास्त करने की कोशिश करते हैं तो आपको सच को तोड़ - मरोड़कर पेश करना पड़ेगा। हाल के दशक में, केन्द्रीय बैंकों का बड़े पैमाने पर भरोसा किया गया है कि उन्होंने तनाव के समय बेहतर तरीके से संप्रेषण किया है बजाए संप्रेषण न करने के। हाल के संकट ने संप्रेषण में बढ़ते इस विश्वास को और दृढ़ बनाया है क्योंकि केन्द्रीय बैंकों ने महसूस किया और इससे उन्हें राहत भी मिली कि जनता को सूचित करना और उसे अद्यतन स्थिति की जानकारी देना वास्तव में चिंता और अफरातफरी को बढ़ाने के बजाए उसे कम करता है।

5. मेरे इस विषय को चुनने का अंतिम तर्क यह है कि यह एक सीधा-सादा विषय है। यह व्याख्यान मीडिया गृहों द्वारा आयोजित किया गया है, और हमारी संप्रेषण रणनीति में आने वाली कुछ दुविधाओं और चुनौतियों को जनता के बीच बांटने के लिए इससे अच्छा और कौन-सा बेहतर मंच हो सकता है।

संप्रेषण का क्षेत्र

6. केन्द्रीय बैंक का संप्रेषण बौद्धिक चर्चा का विषय रहा है, लेकिन ऐसी स्थिति लगभग हमेशा मौद्रिक नीति के संप्रेषण के संबंध में भी रही है। इसे समझने की बात है क्योंकि मौद्रिक नीति केन्द्रीय बैंकिंग के मूल में है और संभवतः इस कारण भी क्योंकि मौद्रिक नीति का संप्रेषण तार्किक रूप से अन्य नीतियों को संप्रेषित करने की तुलना में अधिक चुनौतीपूर्ण है। आज के अपने व्याख्यान में यद्यपि व्यापक संदर्भ में मैं संप्रेषण के बारे में बोलूंगा - न कि मात्र मौद्रिक नीति के संदर्भ में बल्कि इसमें रिज़र्व बैंक के मैडेट के अन्य आयामों - जैसे विनियमन और पर्यवेक्षण, मुद्रा प्रबंधन और बाह्य क्षेत्र प्रबंधन - को भी शामिल करूंगा।

एलेन ग्रीनस्पैन - संप्रेषण के आदि पुरुष

7. केन्द्रीय बैंकों के आदि पुरुष - एलेन ग्रीनस्पैन को पहले श्रद्धांजलि दिये बिना केन्द्रीय बैंक संप्रेषण के बारे में बोलना अनुचित होगा। अब मैं उनके बारे में बताना चाहूंगा।

8. एलेन ग्रीनस्पैन केन्द्रीय बैंक संप्रेषण को एक कला के रूप में रूपांतरित करने सहित कई चीजों के लिए विशेष विख्यात रहे हैं। उन्होंने 1987 में कहा 'चूंकि मैं केन्द्रीय बैंकर हो चुका हूँ, मैंने काफी अधिक असहजता के साथ बुदबुदाना सीख लिया है। यदि मैं अनुचित रूप से आपके प्रति स्पष्ट दिखता हूँ तो मैंने जो कहा है उसका आप गलत अर्थ लगाएंगे'।

9. इस कार्य में लगभग 15 वर्ष जुड़े रहने के बाद, अक्टूबर 2001 में ग्रीनस्पैन ने यह कहते हुए यूटर्न लिया, 'खुलापन आर्थिक निष्पादन को बेहतर आकार देने में बहुत अधिक उपयोगी है। खुलापन एक मुक्त और प्रजातांत्रिक समाज में केन्द्रीय बैंक का एक दायित्व है। हमारी गतिविधियों की पारदर्शिता एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा हम अपने साथी नागरिकों को इसका निर्णय लेने में उनकी मदद करने के प्रति उत्तरदायी हैं कि क्या हम उस कार्य के लिए योग्य हैं'। वास्तव में हम ग्रीनस्पैन के ऋणी हैं और शायद उनके डैल्फिक कथनों के लिए, जिन्होंने बहुत अधिक विद्वत्तापूर्ण विचार दिये कि केन्द्रीय बैंक संप्रेषण कैसे महत्त्वपूर्ण है।

केन्द्रीय बैंक संप्रेषण कैसे महत्त्वपूर्ण है?

10. पिछले दो दशकों में, केन्द्रीय बैंक अधिक स्पष्ट संप्रेषण और अधिक पारदर्शिता की ओर आगे बढ़े हैं। इसके पीछे कई प्रेरणाएं रही हैं।

11. सर्वप्रथम, केन्द्रीय बैंकों ने महसूस किया है कि खुला और पारदर्शी संप्रेषण प्रत्याशित परिणामों को प्राप्त करके नीतिगत प्रभावशीलता को बढ़ाता है। जानी बूझी गूढ़ता छोड़कर अधिक पारदर्शिता अपनाना केन्द्रीय बैंकों के वास्तव में, मौद्रिक नीति के सिद्धांत में बदलाव को दर्शाता है। 1999 के प्रारंभिक दशक में, मौद्रिक नीति नोबल पुरस्कार विजेता रॉबर्ट लूकाज के इस तर्क से बहुत अधिक प्रभावित थी कि मौद्रिक नीति ने वास्तविक परिवर्तनशील चरों जैसे वृद्धि, को केवल तभी प्रभावित किया जब नीतिगत परिवर्तनों का अनुमान नहीं लगाया जा सकता था। इससे खुलेपन और स्पष्टता की अपेक्षा अस्पष्टता को बढ़ावा मिला लेकिन इस संदेश में यह बात छिपी थी कि मौद्रिक नीति हमेशा मुद्रास्फीति जैसे सांकेतिक परिवर्तनशील चरों को प्रभावित करती है चाहे यह पूरी तरह से अनुमानित हो। 1980 के दशक में नोबल पुरस्कार विजेता दो अर्थशास्त्रियों फिन कीलैंड तथा एड प्रेसकॉट ने तर्क दिया कि विवेकपूर्ण नीति परिवर्तनों की तुलना में पूरी तरह से पारदर्शी नियम और अधिक प्रभावी तथा भरोसेमंद होते हैं। यहीं से विवेक तथा और अधिक केन्द्रीय बैंक पारदर्शिता की तुलना में नियमों की ओर जाने की शुरुआत हुई।

12. पारदर्शिता की ओर इस अंतरण का सबसे मुखर उदाहरण अमरीकी फेड की संप्रेषण रणनीति में परिवर्तन है। आज के परिप्रेक्ष्य में यह कल्पना करना कठिन होगा कि 1994 के पहले अमरीकी फेड टारगेटिंग फेड फंड दर की घोषणा भी नहीं करता था; बाजार से आशा की जाती थी कि वह खुले बाजार परिचालनों के समय, क्रमबद्धता और मात्रा से दर का पता लगाये। इसके ठीक विपरीत, आज फेड न केवल दर की घोषणा करता है बल्कि भावी नीति का भी संकेत देता है। वास्तव में, इन दिनों नीति दरों की घोषणा करना, नीति कार्रवाई के पीछे के तर्क देना, प्रत्याशित परिणाम देना और भावी नीति कार्रवाइयों पर प्रायः भावी दिशा-निर्देश देना केन्द्रीय बैंकों के लिए मानक प्रैक्टिस हो गई है।

13. जबकि नीति बनाने के *पश्चात्* उसका संप्रेषण करना संप्रेषण का मानक तरीका हो गया है, केन्द्रीय बैंक भी नीति कार्रवाई के पहले व्यापक रूप से संप्रेषण करते हैं। एक बार फिर यह अनुभव का एक सबक है - कि बाजार अप्रत्याशित सूचनाओं को पसंद नहीं करता और अचानक कोई कार्य करने से बचना चाहिए जबतक कि, किसी दुर्लभ परिस्थिति में, अचानक कोई कार्य इसकी रणनीति का हिस्सा न हो। जब फेड ने पिछले अगस्त में घोषित किया कि वह आर्थिक सहायता क्यूई1 के पहले चरण के अंतर्गत खरीदी गई परिपक्व होने वाली प्रतिभूतियों के आगम की राशि का पुनर्निवेश करेगा तो बाजार हतोत्साहित हो गए। इसके विपरीत, क्यूई2 की वास्तव में बहुत अधिक आलोचना हुई है लेकिन यह निश्चित है कि यह संप्रेषण में किसी प्रकार की कमी के कारण नहीं है।

14. रिजर्व बैंक में भी ऐसा ही अनुभव किया गया। संकट के आने तक और संकट के बाद (दोनों स्तरों पर) हमें कई 'चक्रेतर' नीति समायोजन करने पड़े। इस पर व्यापक सहमति थी कि ये उपाय समीचीन हैं; इसके बावजूद अचानकता के तत्व के कारण बाजार ने उन्हें ठीक नहीं समझा। इसने सितंबर 2010 से और अधिक पुनर्गठित अनुसूचित मध्य तिमाही की समीक्षाओं की शुरुआत करके, हमारी संप्रेषण रणनीति को संशोधित करने के लिए हमें प्रोत्साहित किया। जबकि हमने आवश्यकता के अनुसार नीति कार्रवाई करने में अपने लचीलेपन को नहीं त्यागा है, नीति समीक्षाओं को और अधिक बार-बार अनुसूचित बनाना चक्रेतर कार्रवाई की आवश्यकता को कम करता है और इस प्रकार यह अचानकता के तत्व को कम करता है।

15. कभी-कभी संप्रेषण नीति का वाहक होने के बजाए स्वयं में नीति बन सकता है। संकट के दौरान अमरीकी अनुभव से पुनः निष्कर्ष निकालते हुए, फेड ने महसूस किया कि 'विस्तारित अवधि के लिए'

कम दरों को रखने की इसकी बार-बार की घोषणा से बाजार एक निश्चित अनुमान पर पहुंचा कि 'विस्तारित अवधि' से क्या तात्पर्य हो सकता है। इस संदर्भ में, कुछ नीति विश्लेषकों ने तर्क दिया कि एक कदम, जिस पर फेड विचार कर सकता था, यह था कि निवेशकों को सूचित करने के लिए उस कथन की भाषा को संशोधित किया जाता जिसमें कहा गया कि इसने लक्ष्य फेडरल फंड दर को लंबे समय के लिए कम रखना अनुमानित किया है बजाए इसे बाजार के वर्तमान मूल्यों के आधार पर तय करने के। ऐसा विश्वास था कि इससे वित्तीय स्थितियां वांछित के अनुसार आसान हो जातीं।

16. संप्रेषण उस समय फीडबैक प्राप्त करने के लिए एक संभावित शक्तिशाली उपकरण हो सकता है जब प्रस्तावित नीति के निहितार्थ और प्रभाव अनिश्चित हों। उदाहरण के लिए, रिजर्व बैंक ने यह मुद्दा विचार-विमर्श के लिए प्रचारित किया है कि क्या बचत खाते पर ब्याज दर को अविनियमित किया जा सकता है, ब्याज दर संयोगवश कुछ ब्याज दरों में एक ऐसी दर है जो प्रशासित बनी हुई है। इसके अविनियमन के पक्ष और विपक्ष दोनों के तर्क प्रत्यकारी हैं। भारतीय रिजर्व बैंक में हमने महसूस किया कि यह, सभी बड़े निर्णयों की तरह, एक न्याय पुकार है और हमें किसी निर्णय तक पहुंचने के लिए 'समूह के सद्विवेक' की आवश्यकता है। विवेचना करने वाले लोगों ने निःसंदेह महसूस किया है कि विचार और फीडबैक लेना रिजर्व बैंक के अधिकांश नीति निर्णयों के लिए अब मानक परंपरा हो गई है।

17. एक दूसरा कारक, जिसने केन्द्रीय बैंकों को संप्रेषण पर और अधिक जोर देने के लिए प्रोत्साहित किया है, है कि इसने संकट के पहले वर्षों में स्वायत्तता को बड़ी मुश्किल से जुटाया है। केन्द्रीय बैंकों ने व्यापक तौर पर इस आलोचना का जवाब देने के लिए और अधिक खुला संप्रेषण स्वीकार किया है कि अनिर्वाचित निर्णयकर्ताओं वाले स्वायत्त केन्द्रीय बैंक प्रजातांत्रिक ढांचे के अनुरूप नहीं हैं।

18. अंत में, केन्द्रीय बैंक संप्रेषण सीखने, सुनने और समझने के लिए संस्था के हित में महत्वपूर्ण है। यह वह सबक है जिसे हमने रिजर्व बैंक में याद कर रखा है। मैं यहां पर मानक एकमार्गीय मौखिक अथवा लिखित संप्रेषण का जिक्र नहीं कर रहा हूँ बल्कि केन्द्रीय बैंक और इसके हितधारियों के बीच द्विमार्गीय संप्रेषण का उल्लेख कर रहा हूँ, साथ ही केन्द्रीय बैंक व्यापक स्तर से श्रवण मुद्रा में बना हुआ है। पिछले वर्ष हमारी प्लैटिनम जयंती के दौरान, हमने 'आउटरीज' कार्यक्रम शुरू किया जिसमें हमारे फील्ड कार्यालय के स्टाफ के साथ हमारे सभी वरिष्ठ प्रबंधन ने मिलकर और वाणिज्यिक बैंकों के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के साथ पूरे देश के दूरदराज के गांवों का दौरा किया। इससे कई तरीके से अनुभव मिले। सबसे अधिक हमने पाया कि लोगों

को सुनना और उनकी चिंताओं को समझना हमारे नीति निर्माण को काफी शक्तिशाली तरीके से परिष्कृत करता है। इसकी व्यापक मूल्य योजकता के कारण, हम नियमित गतिविधि के रूप में आउटरीज कार्यक्रम को जारी रखे हुए हैं।

संप्रेषण: दुविधाओं के उदाहरण

19. मैंने हाल के कुछ उदाहरणों की मदद से आपको अबतक बताया है कि क्यों केन्द्रीय बैंक संप्रेषण का महत्व बढ़ा रहा है। मैंने चर्चा की है कि हम यहां से कैसे आगे जा सकते हैं। एक विकल्प है कि सबकी सूची बनाई जाए जिसे मैंने रिजर्व बैंक में संप्रेषण में सुधार करने के लिए लागू किया है, लेकिन, यह एक उबाऊ सूची हो सकती है। दूसरा विकल्प है कि केन्द्रीय बैंक संप्रेषण पर विद्वतापूर्ण चर्चा की जाए लेकिन हमारे चारों ओर ऐसे बहुत बहुत से विशेषज्ञता वाले लोग भी हैं जिन्होंने हमसे ज्यादा कार्य किया है। इसलिए हमने निर्णय लिया है कि मैं संप्रेषण दुविधाओं और चुनौतियों के ऐसे दस उदाहरण दूंगा जिनका हाल में हमने रिजर्व बैंक में सामना किया है।

(i) मौद्रिक नीति - विराम लिया जाए अथवा न लिया जाए

20. जैसा कि हम सभी जानते हैं कि संकट अवधि के विस्तारकारी मौद्रिक रुझान से बाहर निकलने की सोच-समझ में, रिजर्व बैंक पिछले एक वर्ष से वृद्धि मुद्रास्फीति से संघर्ष कर रहा है। नवंबर 2010 के प्रारंभ में दूसरी तिमाही समीक्षा के समय, हमने पहले ही नीति ब्याज दरों को पांच बार बढ़ाया। इस नीति समीक्षा के पहले केन्द्रीय मुद्दा था कि क्या हम नीति को कठोर बनाना जारी रखें अथवा विराम की स्थिति में रहें और इसके बाद नीति को कठोर बनाया जाना चाहिए। हमने विशेषज्ञों और अर्थशास्त्रियों से परामर्श किया और पाया कि उनके बीच मतैक्यता नहीं है। एक विचार था कि हम थोड़े समय के लिए विराम दें जिससे पहले से बढ़ाई गई दर प्रभावी हो जाए और उसके बाद मौद्रिक कड़ाई की शुरुआत की जाए। विरोधी विचार था कि हमें मौद्रिक कड़ाई उस सीमा तक जारी रखनी चाहिए जो आरबीआइ के मुद्रास्फीति के अनुमानों को बता सके और उसके पश्चात विराम दे सके। रिजर्व बैंक के अंदर विचार था कि नीति प्रक्षेपण पथ के अंतर्गत इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है कि हम थोड़े समय के लिए विराम देते हैं जबतक हम परिणामी नतीजे के प्रति प्रतिबद्ध बने रहते हैं। बाजार में इस दुविधा की स्थिति का अर्थ लिया गया कि हमारे क्रियाकलाप को एक अर्धविराम के रूप में लिया जाए और न कि पूर्ण विराम के रूप में। वास्तव में, क्या हम दुविधा की स्थिति का प्रभावी तरीके से प्रबंधन करते हैं यह आपको तय करना है।

ii) मौद्रिक नीति रुझान - भावी दिशा-निर्देश

21. केन्द्रीय बैंकों ने सीखा है कि नीति प्रक्षेपण पथ पर भावी मार्ग निर्देशन बाजार प्रत्याशाओं को प्रबंधित करने का एक प्रभावी तरीका है। लेकिन, उन्होंने यह भी सीखा है कि यह एक संपूर्ण सौम्य विकल्प है। भावी मार्ग निर्देशन कतिपय प्रत्याशित समष्टिआर्थिक गतिविधियों के मामले में विशेष रूप से सशर्त है। दुविधा यह है कि इस शर्त को कैसे सही तरीके से संप्रेषित किया जाए और यह कैसे सुनिश्चित किया जाए कि बाजार सशर्तता पर ध्यान नहीं देगा और मार्ग-निर्देश को एक अकाट्य प्रतिबद्धता के रूप में समझेगा। सर्वोत्तम परंपरा के अनुरूप, रिजर्व बैंक में भी हमने कतिपय भावी दिशा-निर्देश देने शुरू किये हैं। प्रत्याशा के अनुसार, हमारे सामने भी उच्च कोटि की संप्रेषण दुविधा है। मैं प्रकाश डालना चाहूँगा। नवंबर 2010 के प्रारंभ की दूसरी तिमाही समीक्षा में, हमने कहा था:

“वर्तमान वृद्धि और मुद्रास्फीति रुझान पर पूरी तरह से आधारित, रिजर्व बैंक का विश्वास है कि निकट भविष्य में और दर कार्रवाइयों की संभावना सापेक्षिक रूप से कम है। एक अनिश्चित विश्व में, हमें उन आघातों को समुचित रूप से जवाब देने के लिए तैयार रहने की आवश्यकता है जो वैश्विक अथवा देशी वातावरण से आ सकते हैं”।

22. अनेक विशेषज्ञों ने हमारे भावी दिशा-निर्देशों की तारीफ की है, लेकिन कुछ का विचार है कि हम सशर्तता और ‘निकट भविष्य’ द्वारा आशयित समय सीमा के संबंध में सही नहीं थे। मैं केवल यह कह सकता हूँ कि अस्पष्टता का तत्व जानबूझकर था क्योंकि इससे बचा नहीं जा सकता था।

iii) मौद्रिक नीति रुझान - सामान्य के नजदीक अथवा और नजदीक?

23. मैं आपको एक दूसरा उदाहरण देता हूँ कि हमें कितनी पीड़ा होती है कि कैसे हमारे एक-एक शब्द का अर्थ निकाला जाता है। सितंबर 2010 की मध्य तिमाही की समीक्षा में, भावी मार्ग-निर्देशन के भाग के रूप में, हमने कहा कि: ‘रिजर्व बैंक विश्वास करता है कि इस अवधि में जो मौद्रिक कड़ाई की गई है उसने मौद्रिक स्थिति को सामान्य के नजदीक ला दिया है’।

24. यहां पर संप्रेषण संबंधी दो दुविधाएं थीं। पहली थी कि कैसे हमें ‘नजदीक’ अथवा ‘और नजदीक’ कहना चाहिए। अंत में, हमने निश्चित किया कि भावी मार्ग-निर्देशन तभी सार्थक होगा यदि हम ‘नजदीक’ कहते, इस प्रकार हमने अपने को आगे की कार्रवाई करने के लिए गुंजाइश दी होती। दूसरी दुविधा यह थी कि क्या ‘सामान्य’ की ‘तटस्थ’

के रूप में व्याख्या की जाएगी। यह दुविधा अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्नों के संदर्भ में उठती है। ‘क्या नीति दरें तटस्थ हो गई हैं?’ तटस्थ नीति दर, जैसा कि अर्थशास्त्री जानते हैं, वह नीति ब्याज दर है जो संभावित वृद्धि तथा कम और स्थिर मुद्रास्फीति के अनुरूप है। लेकिन, भारत जैसी तेजी से बढ़ती और ढांचागत रूप से बदलती अर्थव्यवस्था के लिए तटस्थ दर की शुद्ध परिभाषा करना संभव नहीं है। दूसरी तरफ, ‘सामान्य’ दरों को व्यापक रूप से वृद्धि - मुद्रास्फीति चक्र की तुलना में नीति दरों के उच्चतम और न्यूनतम से जाना जा सकता है। नीति के पश्चात प्रचार प्रसार में, हमने ‘सामान्य’ तथा ‘तटस्थ’ दरों के बीच इस अंतर को संप्रेषित करने में अतिरिक्त प्रयास किये।

iv) मौद्रिक नीति रुझान - अनिश्चितता संप्रेषित करना

25. एक दूसरी दुविधा, जिसका हमें अक्सर सामना करना पड़ता है, यह है कि नीति निर्णय के इर्द-गिर्द की अनिश्चितता को हमें कितना संप्रेषित करना चाहिए। हमारे नीतिगत निर्णय, अन्य कसौटियों के बीच, समष्टि आर्थिक आंकड़ों पर आधारित होते हैं, ये सभी पब्लिक डोमेन होते हैं। मीडिया के पास व्याख्या करने और इसके आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए पर्याप्त से अधिक विशेषज्ञता होती है। इस सबके बावजूद, बाजार रिजर्व बैंक के आंकड़ों के अर्थ लगाने के बारे में जानने के लिए उत्सुक रहता है क्योंकि अंतिम विश्लेषण में, यह हमारी व्याख्या होती है जो नीतिगत निर्णयों की सूचना देती है।

26. एक उदाहरण देता हूँ, हाल के महीनों में औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (आइआइपी) के आंकड़ों में उतार-चढ़ाव रहा है जिससे अंतर्निहित रुझान के बारे में विश्लेषक आश्चर्यचकित हैं और वे आंकड़ों की गुणवत्ता के बारे में शंकायें उठा रहे हैं। बाजार की चिंता समझने योग्य है कि कैसे रिजर्व बैंक आंकड़ों को पढ़ता है। बाजार को यह बताने के लिए कि हम उससे अधिक नहीं जानते जो यह करता है और हमारी निश्चितता की सीमा के बारे में जानकारी देने के लिए सितंबर 2010 की हमारी मध्य तिमाही समीक्षा में हमने कहा कि ‘----- पिछले दो महीनों की उच्च अस्थिरता (आइआइपी की) ने कुछ शंकायें उठाई हैं कि सूचकांक कैसे प्रभावी रूप से औद्योगिक क्षेत्र में अंतर्निहित आवेग को परिलक्षित करता है’।

v) मुद्रास्फीति प्रत्याशा सर्वेक्षण का प्रकटन

27. रिजर्व बैंक चार महानगरों सहित 12 शहरों में फैले 4,000 उत्तरदाताओं के नमूनों के आधार पर तिमाही रूप से मुद्रास्फीति प्रत्याशा सर्वेक्षण करता है। इसे हम सितंबर 2005 से कर रहे हैं और हमने

कालावधि में धीरे-धीरे इसकी सर्वेक्षण कार्यप्रणाली को परिष्कृत किया है। यद्यपि इस सर्वेक्षण को शुरु-शुरु में मुद्रास्फीति की स्थिति के संबंध में हमारे मूल्यांकन में सुधार के लिए एक आंतरिक अभ्यास के रूप में शुरु किये जाने का आशय था, 2009 तक रिजर्व बैंक के अंदर यह विचार बन रहा था कि हमें इस सिद्धांत के आधार पर जनता को सर्वेक्षण के परिणाम 'बताने' चाहिए कि, जहां तक संभव हो, जनता और हमारे बीच कोई सूचना असममिति न हो। हमने इस मामले को बड़ी स्पष्टता से और तेजी से सुलटाया। हमने गुणवत्तापरक आंकड़ों और उच्च स्तरीय तकनीकी समिति द्वारा विश्लेषित आंकड़ों को प्राप्त किया और समिति की सहमति के आधार पर प्रकटन के बारे में निर्णय लिया।

28. असली संप्रेषण दुविधा यह थी जो इसके बाद आयी कि क्या हम 'रिजर्व बैंक' और 'रिजर्व बैंक सर्वेक्षण' के बीच नजदीकी संबंध को संप्रेषित कर सकेंगे तथा जनता को व्यापक तौर पर समझा पाएंगे कि सर्वेक्षण के परिणाम उत्तरदाताओं और रिजर्व बैंक की राय के अनुसार हैं। आरंभिक रिपोर्टों से पता चला कि जनता का एक वर्ग भ्रमित बना हुआ है लेकिन हमें आशा है कि यह भ्रम यथा समय पर दूर हो जाएगा।

मौद्रिक नीति क्षेत्र के बाहर संप्रेषण दुविधा

29. जैसा कि मैंने पहले कहा संप्रेषण दुविधा न केवल मौद्रिक नीति के क्षेत्र में बल्कि रिजर्व बैंक के कार्य के अन्य आयामों में भी आयी। उनके कुछ उदाहरण मैं देना चाहूंगा।

vi) नए बैंक लाइसेंसों के लिए दिशा निर्देश

30. जैसा कि आप जानते हैं कुछ नए बैंकों के लिए लाइसेंस का प्रस्ताव है। पिछली बार रिजर्व बैंक ने 2001 में बैंक लाइसेंस के लिए दिशा निर्देश बनाए थे; तब से दुनिया में बहुत अधिक बदलाव आया है। हमने महसूस किया कि बदले हुए संदर्भ में बैंक लाइसेंसिंग को बदलने की जरूरत है। नई बैंक लाइसेंसिंग में व्यापक मुद्दे अब सभी को पता हैं: पूंजी का आरंभिक आकार, पूंजी रुपांतरण के लिए अनुमति देने की अवधि, गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों के बैंकों में रुपांतरण अथवा एनबीएफसी द्वारा बैंकों का संवर्धन तथा बैंक शुरु करने के लिए कंपनियों को अनुमति देने की आवश्यकता। इन मामलों में कई मुद्दों पर विश्व के विचार बदल गए हैं; अतीत की बहुतसी बातें आज सिद्धांत बन गयी हैं।

31. बाद के अनुभव के आधार पर हम अपने बैंक लाइसेंस दिशानिर्देशों का मूल्यांकन करने और सभी हितधारियों से व्यापक फीडबैक प्राप्त

करने के लिए उत्सुक हैं। तदनुसार हमने प्रत्येक निर्णय की कसौटी के पक्ष और विपक्ष की सूची बनाकर एक चर्चा पत्र लाने का फैसला किया। हम वास्तव में खुले दिमाग के हैं और अपने 'खुलेपन' को संप्रेषित करने के लिए जानबूझ कर प्रयास किए हैं। अधिकांश मीडिया और अधिसंख्य विश्लेषकों ने सोचा कि हम इस मामले में बिलकुल ठीक हैं। लेकिन एक वर्ग ने सोचा कि हमने अपने 'झुकाव' के साथ न्याय नहीं किया जिससे रिजर्व बैंक के अंदर कुछ क्षोभ हुआ। यह स्पष्ट नहीं है कि क्या हम अपने संप्रेषण प्रयास पूरे नहीं कर पाए अथवा हमारे संभाषणकर्ताओं ने हमारा मूल्यांकन करने में अपने पूर्वाग्रहों को थोपा। इस सबके बावजूद, हमारे संप्रेषण को सुधारने के लिए हमारे सामने एक सबक है।

vii) बासल III - सीधा संदेश प्राप्त करना

32. जैसाकि आप में से बहुत से जानते हैं कि नवंबर 2010 में सिओल बैठक में जी-20 ने बैंक निरीक्षण और पर्यवेक्षण के लिए बासल III पैकेज अनुमोदित किया था। बासल III के मूल में बैंकिंग प्रणाली को मजबूत करने, प्रोत्साहन ढांचे को ठीक करने और इसके दीर्घकालिक स्थायित्व को सुनिश्चित करने के प्रयास थे। भारत में हम भारतीय बैंकों पर बासल III के प्रभाव का मूल्यांकन करने की प्रक्रिया में हैं और मैंने इस पर कहीं? विस्तार से कहा भी है। बासल III ने संप्रेषण चुनौतियों सहित कई चुनौतियां प्रस्तुत की हैं। मैं उनमें से दो महत्वपूर्ण चुनौतियों के बारे में बताना चाहूंगा।

33. एक, बासल III के पीछे मूल विचार है कि बैंकों को अच्छे समय में पूंजी और प्रावधानन के बफर बनाने चाहिए और उन्हें मंदी के दौरान उनका उपयोग करना चाहिए ताकि वे हानियों को सहन करने के साथ-साथ उधार देना जारी रख सकें। इसमें अंतर्निहित तर्क सशक्त है, लेकिन यह सहज ज्ञान से कुछ परे है। अनुभव दर्शाते हैं कि बाजार की मांग है कि बैंकों को उच्च जोखिम का सामना करने के लिए मंदी के दौरान अधिक पूंजी और प्रावधानन करना चाहिए। यदि बाजार ऐसी प्रत्याशा जारी रखेंगे तो बैंकों को संभवतः पूंजी 'इकट्ठी' करनी होगी और उधार देना बंद करना होगा जिससे मंदी को बढ़ावा मिलेगा। इसलिए, संप्रेषण चुनौती बफर संबंधी बासेल III की अवधारणा और उसके प्रयोग के ढंग पर बाजार को शिक्षित करना है ताकि ये रक्षोपाय उसी तरह से काम करें जिसके लिए वे अभिप्रेत हैं।

²⁴ बैंकिंग विनियमन और पर्यवेक्षण से संबंधित संकट के पश्चात सुधार - विश्व स्तर पर सोचो, स्थानीय स्तर पर करो', 7 सितंबर 2010 को मुंबई में 'वैश्विक बैंकिंग : भारी परिवर्तन' विषय पर फिक्की - आइबीए सम्मेलन के अवसर पर भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर डॉ. दुवुरी सुब्बाराव द्वारा दिया गया उद्घाटन भाषण।

34. प्रस्तावित बासल III के अंतर्गत दूसरी संप्रेषण चुनौती 'अनुपालन अथवा व्याख्या' ढांचे से आती है जिसके अंतर्गत देशों को पैकेज के कतिपय घटकों से च्युत होने का विकल्प है और वे स्पष्टीकरण दे सकते हैं कि वे क्यों च्युत हुए हैं। असली चिंता यह है कि बाजार, जो निश्चित क्रूरता के लिए विख्यात है, किसी भी विपथन को दंडित करेगा और विनियामकों के लिए संप्रेषण चुनौती बाजार को मनाने की है कि वह स्पष्टीकरण के आधार पर देश के अनुपालन का मूल्यांकन करे।

(viii) प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थाएं (एसआइएफआइ)

35. बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बनी बासल समिति (बीसीबीएस) और वित्तीय स्थिरता बोर्ड (एफएसबी) वर्तमान में प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थाओं (एसआइएफआइ) को विनियमित करने और पर्यवेक्षित करने के लिए एक ढांचा बनाने में लगे हुए हैं। प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थाएं (एसआइएफआइ) जैसी कि ये इस नाम से विख्यात हैं, हाल के संकट के केन्द्र में रही हैं। चूंकि वे 'इतनी बड़ी हैं कि उन्हें फेल नहीं होने दिया जा सकता' और वे 'आपस में इतनी अंतर्संबद्ध हैं कि उन्हें फेल नहीं होने दिया जा सकता', उन्हें करदाताओं की बहुत बड़ी लागत पर बचाना पड़ा। प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थाओं के नैतिक जोखिम को कम करने के तरीके पहचानने, उनकी पहचान के लिए कसौटी परिभाषित करने और उनके लिए विभेदक पूंजी तथा चलनिधि प्रभार तैयार करने के लिए वर्तमान में तेजी से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कार्य चल रहा है।

36. वर्तमान में चर्चा के अंतर्गत व्यवस्था में, प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थाओं को कुछ निश्चित कसौटी के आधार पर पहले से ही पहचाना जाएगा और उन्हें विवेकपूर्ण अधिभारों तथा अन्य रक्षोपायों के अनुसार ग्रेड दिया जाएगा। इनका आशय नैतिक जोखिम को समाप्त करना तथा उनके संभावित प्रणालीगत जोखिम को कम करना है, और यदि ये अवश्यभावी हो जाएं, तो उन्हें सुव्यवस्थित तरीके से फेल जो जाने की अनुमति देना है। इसका आशय व्यापक पर्यवेक्षण के प्रयोजन के लिए प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थाओं को पहले से ही पहचानना है बल्कि इसकी सूची को प्रकट नहीं करना है क्योंकि इससे नैतिक जोखिम बढ़ जाएगा।

37. दुविधा यह है कि बाजार वास्तव में कैसे इस समझी-बूझी अपारदर्शिता के प्रति प्रतिक्रिया करेगा। क्या बाजार प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थाओं (एसआइएफआइ) की सूची के बारे में अनुमान लगाएगा, और वास्तव में यह ऐसा ही करेगा, और क्या वह 'वे इतनी बड़ी हैं कि उन्हें फेल नहीं होने दिया जा सकता' के सिद्धांत को बनाये रखने के रूप में वर्धित विनियमन के पीछे के आशय की व्याख्या करेगा, और क्या वह ऐसी गलत समझ पर बाजार को निधीकृत

करने में प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थाओं को प्रतिस्पर्धी लाभ जारी रख सकेगा तथा इस प्रकार जोखिमपूर्ण व्यवहार को प्रोत्साहित करेगा? और क्या बाजार समझेगा कि प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण वित्तीय संस्थाओं को पहले से पहचानने तथा उनके लिए और अधिक कठोर विनियमन तथा पर्यवेक्षण का सच्चा आशय उनके फेल होने की संभावना को कम करना है, तथा फेल होने की दशा में, उनके समाधान को सुगम बनाना और करदाताओं पर बिना बोझ डाले सभी हितधारियों के बोझ को समान रूप से बांटना है?

पारदर्शिता की सीमाएं - कुछ व्यावहारिक चुनौतियां

38. आप में से बहुत लोग इस बात को जानते हैं कि उपयुक्त खुलासेपन और अनुपयुक्त खुलासे के बीच अंतर है। बहुत अधिक पारदर्शिता से हमेशा बेहतर सूचनाओं का आदान-प्रदान नहीं होता है तथा धीमे और निरंतर शोरगुल से अक्सर समझने में कठिनाई होती है। केन्द्रीय बैंक भी कभी-कभी रणनीतिक कारणों से सूचनाओं को रोक सकता है। आपमें से बहुतों को वह गंभीर चर्चा याद होगी जो अमरीका में बैंक तनाव परीक्षण के परिणामों को जारी करने के पहले शुरू हुई थी। यह आशंका थी कि वे बैंक, जो बैंक 'तनावग्रस्त' के रूप थे, प्रकटन के परिणाम के रूप में फिर से तनाव के दुश्चक्र में फस जाएंगे इस प्रकार उनके सुधरने की गुंजाइश खत्म हो जाएगी। मैं अपने अनुभव से दो उदाहरण देना चाहूंगा जो इस प्रकार की संप्रेषण चुनौतियों पर प्रकाश डालेंगे।

(ix) मुद्रा नोट की सुरक्षा विशेषताएं

39. हमारे मुद्रा नोट की सुरक्षा विशेषताओं के प्रकटन में हम एक उच्च स्तर की संप्रेषण दुविधा का सामना कर रहे हैं। हम जालसाजी को रोकने के लिए पूरी तरह से जागरूक हैं, हमें इसके लिए नोटों की सुरक्षा विशेषताओं को निरंतर बढ़ाने की आवश्यकता है। यह आवश्यक है लेकिन पर्याप्त नहीं है। पर्याप्तता की दशा तभी पूरी होगी जब लोग सुरक्षा विशेषताओं के बारे में जान जाएंगे जिससे वे असली नोट और नकली नोट के बीच अंतर बता सकेंगे। दुविधा यह है कि जब हम जागरूकता का अभियान चलाते हैं तो हम जालसाजियों को भी जानकारी प्रदान कर रहे होते हैं। हम इस मसले का समाधान सुरक्षा विशेषताओं की नकल को तकनीकी रूप से जटिल और निषेधात्मक रूप से खर्चीली बनाकर कर रहे हैं, और कुछ अतिरिक्त सुरक्षा विशेषताओं को भी शामिल कर रहे हैं जिनको केवल अत्याधुनिक उपकरणों और साधनों से पकड़ा जा सकता है। इस संबंध में एक और चुनौती है कि हमारे जागरूकता अभियान को बिना जालसाजियों को अनुचित रूप से सूचित करते हुए जनता को शिक्षित करना है। इसने हमें दिखावा करने की अपेक्षा एक मध्यम स्तर का अभियान शुरू करने के विकल्प के लिए प्रेरित किया है; हो सकता है कि आवश्यक प्रभाव बनाने के लिए लंबा समय लगे, लेकिन यह अधिक स्थायी होगा।

(x) विदेशी मुद्रा भंडार की संघटना का प्रकटन

40. पारदर्शिता की सीमाओं का एक दूसरा उदाहरण देना चाहूंगा। रिजर्व बैंक एक सप्ताह के अंतराल में प्रति सप्ताह विदेशी मुद्रा भंडार के आंकड़े प्रकाशित करता है। हम विदेशी मुद्रा भंडार के प्रबंधन पर एक अर्ध वार्षिक रिपोर्ट भी प्रकाशित करते हैं जिसमें भंडार प्रबंधन रणनीति के उद्देश्य, भंडार की पर्याप्तता, जोखिम प्रबंधन व्यवहार आदि सहित कई विवरण दिए गए होते हैं। लेकिन हम अपने विदेशी मुद्रा भंडार की मुद्रा संघटना का प्रकटन नहीं करते हैं तथा इस संबंध में संप्रेषण की हमारी कमी के लिए हमारी आलोचना की गई है। हम इस कारण मुद्रा संघटना का खुलासा नहीं करते हैं क्योंकि विदेशी मुद्रा भंडार के प्रबंधक के रूप में, बाजार में हम किसी दूसरी वाणिज्यिक संस्था की तरह होते हैं। ये सूचनाएं बाजार संवेदनशील होती हैं तथा प्रकटन संभावित रूप से हमारे वाणिज्यिक हितों को बुरी तरह प्रभावित कर सकता है। प्रकटन से हमारे अंतरराष्ट्रीय संबंधों के लिए भी व्यापक निहितार्थ हो सकते हैं। इसके अलावा, बाजार दक्षता हमारे अप्रकटन को किसी प्रकार से प्रभावित नहीं करती है। वास्तव में सारे संसार में अप्रकटन मानक है; अधिकांश देश विशेष रूप से बड़े भंडार वाले देश अपने विदेशी मुद्रा भंडारों की संघटना का प्रकटन नहीं करते हैं।

41. फिर भी, हम अंतरराष्ट्रीय सर्वोत्तम व्यवहारों के अनुरूप उत्तरोत्तर रूप से व्यापक प्रकटन की ओर अग्रसर हैं। सारे संसार के 68 केंद्रीय बैंकों के बीच रिजर्व बैंक ने मुद्रा संघटना, निवेश पैटर्न और वायदा स्थितियों पर कुछ जानकारी सहित विदेशी मुद्रा भंडार के विस्तृत आंकड़ों के प्रकाशन के लिए स्पेशल डेटा डिसेमिनेशन स्टैंडर्ड्स (एसडीडीएस) टैम्पलेट को अपनाया है। इन आंकड़ों को रिजर्व बैंक की वेबसाइट पर मासिक आधार पर डाला जाता है। बहुत कम केंद्रीय बैंकों में रिजर्व बैंक ही ऐसा बैंक है जो दो माह के अंतराल के बाद अपनी मासिक बुलेटिन में बाजार इंटरवेंशन की संख्या प्रकाशित करता है।

मीडिया की भूमिका और जिम्मेवारी

42. केंद्रीय बैंकों की संप्रेषण दुविधा पर कोई व्याख्यान अधूरा होगा जब तक कि मीडिया की भूमिका और जिम्मेवारी पर चर्चा नहीं की जाती। इसलिए मैं संक्षेप में इस मुद्दे पर कुछ कहूंगा।

43. सबसे पहले मैं भारतीय मीडिया - प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक दोनों - को नीति निर्माताओं और हितधारियों के बीच मध्यस्थता की उपयोगी भूमिका निभाने के लिए बधाई देना चाहूंगा। मीडिया जनता के बीच समाचार प्रसारित करती है, उनकी व्याख्या करती है और उनका

वर्णन करती है, इसके विपरीत हितधारियों की चिंताओं, धारणाओं और विकल्पों के बारे में नीति निर्माताओं को सूचित करती है। रिजर्व बैंक में, मीडिया के साथ हमारे व्यावसायिक और पारस्परिक लाभकारी संबंध हैं। वे रिजर्व बैंक की नीतियों और कार्रवाइयों के बारे में हितधारियों को सूचित करके एक बड़ा काम करते हैं, और हमें अपने फीडबैक और आलोचना लेख के माध्यम से सतर्क रखते हैं। मैं अक्सर मीडिया विश्लेषण की गहराई और उनके बुद्धिमतापूर्ण विकल्पों और उनके नेताओं से प्रभावित होता हूँ। मैं आपको एक गुप्त बात भी बताना चाहूंगा। मेरा स्टाफ निर्धारित मीडिया चर्चा के पहले मुझे बड़े परिश्रम से सिखलाता है, लेकिन हमारी समझ की गहराई की अक्सर मीडिया के उन संभाषणकर्ताओं द्वारा परीक्षा ली जाती है जो ऐसे प्रश्न करते हैं जिनके बारे में हमने कभी सोचा नहीं होता है।

44. यद्यपि मीडिया रिजर्व बैंक और इसके हितधारितियों के बीच एक प्रभावी मध्यस्थ की भूमिका निभाती है, ऐसे अन्य तरीके हैं जिससे यह और अधिक प्रभावी हो सकती है। अब मैं इस संबंध में कुछ सुझाव देना चाहूंगा।

45. कभी-कभी मैं पाता हूँ कि मीडिया के बीच प्रतिस्पर्धा विश्लेषण की गुणवत्ता के विरुद्ध कार्य करती है। मीडिया आर्थिक और वित्तीय समाचार, वास्तव में किसी भी समाचार, को तीन स्तरों पर प्रसारित करती है। पहला स्तर 'समाचार' है क्योंकि 'समाचार' और मैं इस स्तर पर दौड़ में आगे रहते हैं। दूसरा स्तर विश्लेषण और व्याख्या का है तथा तीसरा स्तर 'मत' का है। ऐसा बाद वाले दो स्तरों पर होता है कि 'प्रथम आने' की प्रतिस्पर्धा में गुणवत्ता से समझौता करना पड़ता है। संभवतः मीडिया और अधिक प्रभावी तथा मूल्यवर्धनकारी हो सकती है यदि इसे समाचारों को हजम करने और इसे 'विश्लेषण और व्याख्या' के पहले सोचने का समय दिया जाए, तथा यह 'मत' देने के पहले कुछ अनुसंधान करे। मैं पत्रकारिता का विशेषज्ञ नहीं हूँ, लेकिन पत्रकारिता का उपभोक्ता होने के नाते, मेरा सोचना है कि मेरा हित और अधिक गहन विश्लेषण तथा आलोचना के द्वारा बेहतर तरीके से पूरा होगा बजाए 'उठो और चलो' प्रकार के मत प्रसारण के।

46. दो, मीडिया रिपोर्टिंग कभी-कभी सही नहीं होती है, और ऐसे मामलों में गलत सूचना का जोखिम अधिक होता है। यदि हैदराबाद में डॉ. रेड्डी की प्रयोगशाला 9 प्रतिशत आय वृद्धि का अनुमान लगाती है और यदि इसे 'डॉ. रेड्डी ने 9 प्रतिशत वृद्धि का अनुमान लगाया है' एक बड़ी हेडलाइन के अंतर्गत रिपोर्ट किया जाता है तो प्रबुद्ध पाठक आरबीआइ के तत्कालीन गवर्नर डॉ. वाइ.वी. रेड्डी को

भाषण

केन्द्रीय बैंक संप्रेषण में दुविधा की स्थिति:
हाल के अनुभवों पर आधारित कुछ विचार

समझने की यह भूल कर सकते हैं कि उन्होंने 9 प्रतिशत जीडीपी वृद्धि का अनुमान लगाया है। निश्चित रूप से, और अधिक कठोर गुणवत्ता नियंत्रण मीडिया को अधिक उपयोगी और प्रभावी 'समाचार अंतरमध्यस्थ' बनायेगी।

47. तीन, मैं अधिक से अधिक समाचारों पर मीडिया के अटल फोकस की प्रशंसा कर सकता हूँ जो यह कहती है कि मीडिया की अपने रिपोर्टिंग को प्रसारित करने की एक जिम्मेदारी भी होती है। आप अक्सर बड़ी-बड़ी हेडलाइन में किसी घटना की छोटी-छोटी बातों पर नीतिनिर्माताओं द्वारा कही गयी बातों की रिपोर्ट करते हैं और उस घटना को ही पूरी तरह नजरअंदाज कर देते हैं। यह प्रवृत्ति, मैं समझता हूँ कि घटना के आयोजकों और उन विशाल श्रोताओं के साथ अनुचित होगी जो घटना के बारे में जानना चाहते हैं।

48. मैं इससे भी हैरान हूँ कि मीडिया भाषण के एक छोटे भाग का चयन करती है और केवल उसी को रिपोर्ट करती है और कभी-कभी तो संदर्भ के बाहर भी। उदाहरण के लिए, कुछ महीने पहले मैंने भारतीय बैंकिंग प्रणाली के लिए बासेल III के निहितार्थों पर बैंकों के सम्मेलन में बोला था और बोलते समय मैंने कहा था कि सार्वजनिक क्षेत्रों के बैंकों की संरचना को प्रतिभा आकर्षित करने और बनाये रखने के लिए कैसे एक बार पुनः वेतन पर पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। मैं परेशान हो गया कि कैसे इस छोटी-सी बात को व्यापक तरीके से रिपोर्ट किया गया और इस पर टीका टिप्पणी की गयी। मानता हूँ कि यह रिपोर्टिंग रचनात्मक थी लेकिन मैं अभी भी महसूस करता हूँ कि बासेल III के बड़े मुद्दे भी समाचार और टीका टिप्पणी के लिए लिए जाने चाहिए थे।

49. अंत में, एक संक्षिप्त लेकिन महत्वपूर्ण टिप्पणी हाल के संकट के दौरान मीडिया की भूमिका पर प्रस्तुत करना चाहूँगा। इसने समाचारों और विचारों को प्रसारित करने में एक प्रभावी और व्यापक उपयोगी भूमिका निभाई है, लेकिन ऐसे अवसर पर उन्माद को भी बढ़ाया है। यदि मीडिया ने सनसनी के स्थान पर संयम बरता होता तो संकट के दौरान कुछ घबराहट से बचा जा सकता था फिर यह चाहे किसी भी गति की होता।

50. मैंने मीडिया की इतनी अधिक आलोचना कमियाँ निकालने के लिए नहीं की है बल्कि मैं अपनी धारणा को बताना चाहता हूँ। मैं यह दोहराना नहीं चाहता कि मीडिया एक रचनात्मक और मूल्य योजक भूमिका अदा करती है तथा वह संस्था के रूप में आरबीआइ के लिए और गवर्नर के रूप में मेरे लिए अपने मैनडेट पर बोलने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है।

निष्कर्ष

51. अब मैं अपनी बात समाप्त करना चाहूँगा। संप्रेषण के मामले में, केन्द्रीय बैंक निश्चित रूप से अतीत की गर्वित उदासीनता से वर्तमान की सतर्क उत्सुकता तक बहुत, बहुत आगे निकल गया

है। इस पर विचार करते हुए, 1930 के दशक में लॉर्ड कीन्स द्वारा बैंक ऑफ इंग्लैंड की आलोचना पर उप गवर्नर सर अर्नेस्ट हार्वे को मैकमिलन समिति के सामने साक्ष्य देना पड़ा: 'जहां तक आलोचना की बात है हम (बैंक ऑफ इंग्लैंड में) स्वीकार नहीं करते कि बचाव के लिए कोई जरूरत है; अपना बचाव करना कुछ इस प्रकार है जैसे कोई एक स्त्री अपने गुणों का बचाव करना शुरू कर देती है'। तेजी से आगे बढ़ते हुए, किसी महिला के गुण अथवा उसकी गुणहीनता, रहस्य और गोपनीयता जैसी बातें केन्द्रीय बैंकों के लिए अब कोई कहावत नहीं रह गई हैं। दूसरी तरफ, केन्द्रीय बैंक अब इस तथ्य के प्रति होशियार हो गए हैं कि वैश्वीकरण के इस युग में वे अपनी प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए संप्रेषण पर बल दे सकते हैं।

52. व्यापक तौर पर, केन्द्रीय बैंक संप्रेषण न केवल खुलावा और पारदर्शिता का बल्कि शिक्षा, मागदर्शन, दृढ़ निश्चय और वार्ता का; तथा सुनने और सीखने का भी मामला है। संप्रेषण में हमारे द्वारा सामना की जा रही दुविधाओं और चुनौतियों के बारे में आपको बताने का मेरा उद्देश्य आपको यह सूचित करना है कि हम कैसे सावधानीपूर्वक विभिन्न नीतिगत विकल्प को तोलते हैं और कैसे एक बार नीति विकल्प बन जाने के बाद यह तय करते हैं कि क्या कहना है और कैसे कहना है। रिजर्व बैंक अपनी संप्रेषण भूमिका को गंभीरता से लेता है। हमारा निरंतर प्रयास रहता है कि ऐसे स्पष्ट तरीके से संप्रेषण किया जाए ताकि गलत व्याख्या करने की गुंजाइश कम से कम हो; ऐसे प्रभावी तरीके से भी कि विभिन्न लक्ष्य समूह संबंधित सूचना और संदेश प्राप्त कर लें; ऐसे ईमानदारीपूर्ण तरीके से कि हम ज्ञात के बारे में बता सकें और जिसके बारे में ज्ञात नहीं है उसके बारे में संकेत कर सकें; और ऐसे सुसंगत तरीके से कि लोग हमारी नीतियों और कार्रवाइयों को अतीत की प्रवृत्तियों तथा भावी अनुमानों से संबद्ध कर सकें।

53. निःसंदेह भारतीय रिजर्व बैंक में, हमें अभी भी संप्रेषण में सर्वोत्तम प्रथा तक पहुंचने के लिए कोई मार्ग अपनाना होगा। मैं जो कुछ कह सकता हूँ वह यह है कि हम उसे पाने के लिए हरेक प्रयास करेंगे।

भारतीय रिजर्व बैंक

संप्रेषण बढ़ाने के लिए हाल के कुछ उपाय

वास्तविक

- मौद्रिक नीति समीक्षा की बारंबारता को बढ़ाना
- अन्य हितधारियों के अलावा शिक्षाविदों और मीडिया के साथ नीति के पूर्व परामर्श
- नीतिगत निर्णयों के पीछे तर्क तथा और निर्णयों से संबंधित संदर्भ को स्पष्ट रूप से मौद्रिक नीति में संप्रेषित करना

- जब भी जरूरी हो भावी दिशानिर्देशन प्राप्त करना
 - नीतिगत कार्रवाइयों से प्रत्याशित परिणाम बताये जाए
 - आच्छादन और दोहराव से बचने के लिए तर्कसंगत समष्टि और मौद्रिक गतिविधियां तथा मौद्रिक नीति दस्तावेज संक्षिप्त और स्पष्ट हो
 - एक वर्ष में दो बार वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट का प्रकाशन
 - फीडबैक के लिए वेबसाइट पर नीति मसौदा
 - प्रमुख नीतिगत निर्णयों के परामर्श दस्तावेजों को आरबीआइ के पूर्वाग्रह से मुक्त रखने के स्पष्ट उपाय
 - वेबसाइट पर सांख्यिकी की तत्काल हैडबुक
 - नीति के लिए इनपुट प्रदान करने वाले विभिन्न सर्वेक्षण सहित पब्लिक डोमेन में अधिक से अधिक अनुसंधान और डेटा को रखना
- प्रक्रिया**
- इन कार्यालयों के बारे में जानकारी देने के लिए आरबीआइ वेबसाइट पर गवर्नर और उप गवर्नर के सार्वजनिक कार्यक्रम की अनुसूची का प्रकाशन
 - गवर्नर की प्रेस सभा का सीधा वेब प्रसारण / टेलीकास्ट प्रसारण तथा वेबसाइट पर इसे डालना
 - वेबसाइट पर गवर्नर के प्रेस सम्मेलन की प्रतिलिपि प्रकाशित करना
 - मीडिया के साथ टेलीकॉन्फ्रेंसिंग
 - प्रति वर्ष एक बार संपादकों का सम्मेलन
 - अनुसंधानकर्ताओं / विश्लेषकों के साथ नीतिपूर्व बातचीत
 - मौद्रिक नीति सहित रिजर्व बैंक के बड़े प्रकाशनों को सुकर बनाना ताकि उन्हें संक्षिप्त और पाठक प्रिय बनाये जा सके
 - महत्वपूर्ण प्रकाशनों और अनुसंधान पर मीडिया तथा शिक्षाविदों के साथ सेमिनार और संक्षिप्त चर्चा।
 - मीडिया के व्यक्तियों के लिए अनौपचारिक संक्षिप्त चर्चा और प्रशिक्षण कार्यक्रम जिससे रिजर्व बैंक की भूमिका और कार्यकलाप बताये जा सकें तथा विशिष्ट आसन्न मुद्दों की व्याख्या की जा सके
 - बच्चों तक पहुंचने के लिए बैंकिंग और केन्द्रीय बैंकिंग पर हास्य पुस्तकों का प्रकाशन
 - वित्तीय साक्षरता / समावेशन के लिए पूरे देश भर में दूराज के क्षेत्रों में आउटरीच कार्यक्रम
 - स्थानीय प्रदर्शनियों और मेलों में सहभागिता
 - महानगरों के बाहर टाउनहॉल कार्यक्रम जिससे केन्द्रीय बैंक को आम आदमी के पास लाया जा सके
 - रिजर्व बैंक और मुद्रा के इतिहास के चित्रण के लिए विशेष प्रदर्शनियां (मुंबई और कोलकाता में)
 - क्षेत्रीय कार्यालयों में वित्तीय साक्षरता केन्द्र खोलना
 - जनता के हित के मामलों में केन्द्रित जागरूकता का प्रचार करने के लिए अभियान।